Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.04, No.3, March, 2025

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में संगीतशास्त्र की उपादेयता

डॉ.अरुण कुमार निषाद
असिस्टेण्ट प्रोफेसर (संस्कृत विभाग)
मदर टेरेसा महिला महाविद्यालय, कटकाखानपुर, द्वारिकागंज, सुल्तानपुर|

****

शोध सार

*जीवन का तात्पर्य मानव जीवन से है, पशु-पक्षी जीवन से नहीं और संगीत का तात्पर्य केवल शास्त्रीय संगीत से नहीं, बल्कि भाव संगीत, चित्रपट संगीत, लोक संगीत आदि से भी है | भारतीय जीवन के पग-पग में संगीत व्याप्त है | जन्म से लेकर मृत्यु तक यह हमारे साथ बना रहता है | जिस क्षण बालक के संसार में प्रथम परिचय प्राप्त करता है तो वह संगीत द्वारा (रोने के रूप में) अपना आभार व्यक्त प्रकट करता है और जिस समय मनुष्य इस संसार से विदा होता है तो संगीत के द्वारा उसे राम नाम की महिमा बताई जाती है | इतना ही नहीं मानव के इतिहास में जब भाषा का जन्म तक नहीं हुआ था, उस समय आपस में भावों का आदान-प्रदान संगीत द्वारा ही संभव था | **मैक्समूलर** ने ठीक ही कहा है कि संगीत का जन्म भाषा से कहीं पूर्व हुआ है |*

भारतीय जीवन में 16 संस्कार माने गए हैं जैसे- नामकरण, कर्णछेदन, मुण्डन विद्यारम्भ, यज्ञोपवीत (जनेऊ) विवाह आदि इसमें से प्रत्येक का प्रारम्भ और अन्त संगीत से होता है | ऐसा भी कोई त्यौहार नहीं है, जहाँ संगीत न हो, बल्कि संगीत के बिना त्यौहार अधूरा रह जाता है | छोटा-बड़ा कोई भी उत्सव मनाया जाए तो उसमें संगीत आवश्यक है चाहे संगीत प्रार्थना तक ही क्यों न सीमित हो | गाँव में फसल तैयार होती है तो उसका हर्षोल्लास होली के रूप में प्रकट होता है | वे जिस खुशी और आत्मीयता से गले मिलते, रङ्ग छिड़कते और अबीर-गुलाल लगाते हैं कि देखते ही बनता है | उनके हर्ष की चरम सीमा उसे समय पहुँचती है जब वह गाँव के कोने-कोने में ढोलक लेकर अपने-अपने धुन में मस्त रहते हैं | मानो पूरे वर्ष की सारी थकावट निकाल कर रख रहे हों | संगीत केवल मानो विनोद की बात नहीं बल्कि ऐसा चिरस्थाई आनन्द है जिसमें हमें आत्म सुख मिलता है | इसलिए संगीत भक्ति का अभिन्न अङ्ग रहा है | जितने भी अच्छे भक्त हुए हैं सभी संगीत के ज्ञाता और साधक थे | भारत का कौन सा ऐसा व्यक्ति होगा जिसने सूर, तुलसी मीरा आदि का नाम न सुना हो उनके प्रत्येक पद में ऐसा भाव है कि मनुष्य आनन्द विभोर हो जाता है | भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद के शब्दों में हमारे साथ सन्तों के संगीत साधना का ही यह प्रभाव रहा है कि कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, तुकाराम नरसी मेहता ऐसी कृतियाँ कर गए जो हमारे और संसार के साहित्य में सर्वदा ही अपना विशेष स्थान रखेंगी |

मुख्य शब्द: *वैदिक काल और कृषि |*

****

संगीत का प्राचीन रूप हमें सामवेद में दृष्टिगत होता है | छन्दोग्योपनिषद् तथा बृहदारण्यकोपनिषद् में भी संगीत का वर्णन मिलता है | रामायण और महाभारत में अनेक स्थानों पर संगीत सम्बन्धी तत्त्वों का नामोल्लेख मिलता है | स्वयं रावण बहुत बड़ा संगीत प्रेमी था | उसने 'रावणस्त्रन' नामक वाद्ययन्त्र का आविष्कार किया था | इसके पश्चात् भरतमुनि प्रणीत नाट्यशास्त्र | मतङ्गमुनि कृत बृहद्देशी | नारद की नारदीय शिक्षा और संगीत मकरन्द | जयदेव की गीतगोविन्द | शारङ्गदेव की संगीत रत्नाकर | पुण्डरीक विट्ठल विरचित रागमाला, रागमञ्जरी, सद्राग चन्द्रोदय और नर्तन-निर्णय | पण्डित सोमनाथ कृत राग-विबोध | पण्डित अहोबल लिखित संगीत पारिजात | हृदयनारायण देव प्रणीत हृदय-कौतुक और हृदय-प्रकाश | पण्डित व्येंकटमखी द्वारा लिखित चतुर्दण्डिप्रकाशिका | भावभट्ट लिखित अनूप संगीत रत्नाकर, अनूप और विलास तथा अनुपांकुश | श्रीनिवास कृत राग तत्त्व विबोध | मुहम्मद रजा द्वारा लिखित नगमाते आसफी | जयपुर नरेश प्रताप सिंह देव कृत

संगीत-सार | कृष्णानन्द व्यास प्रणीत संगीत राग कल्पद्रुम | फिर तो इसकी जो धारा प्रवाहित हुई वह आज तक अबाध रूप से बह रही है | संगीत रूपी भवन के प्रमुख दो स्तम्भ हैं- स्वर तथा लय | स्वर के रागों का निर्माण हुआ और लय से ताल का

संगीत गायन, वादन और नृत्य की त्रिवेणी है –***"गीतं, वाद्यं तथा नृत्यं, त्रयं संगीत मुच्यते |"***[1]|[1] दूसरे शब्दों में संगीत वह ललित कला है जिसमें स्वर और लय के द्वारा हम अपने भावों को प्रकट करते हैं |

महाकवि भर्तृहरि के शब्दों में

साहित्य संगीत कला विहीन: |

साक्षात् पशु: पुच्छ विषाण हीन: ||

तृणं न खादन्नपि जीवमान-

स्तद्भागधेयं परमं पशूनाम् ||[2] ||[2]

मैक्समूलर के अनुसार – *"संगीत का जन्म भाषा से कहीं पूर्व हुआ है |"*[3] ||[3]

संगीत की महत्ता का वर्णन करते हुए भारत के प्रथम राष्ट्रपति **डॉ. राजेन्द्र प्रसाद** ने कहा था –

" हमारे साधु सन्तों की संगीत साधना का यह प्रभाव था कि कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, तुकाराम, नरसी मेहता ऐसी कृतियाँ कर गये जो हमारे और संसार के साहित्य में सर्वदा ही अपना विशिष्ट स्थान रक्खेंगी |"[4]

प्रमुख संगीत घराने

गायकी से घराने का निर्माण हुआ | एक गायक ने कुछ शिष्य तैयार किये | उन्होंने कुछ अन्य शिष्य तैयार किये | इस प्रकार शिष्यों की पीढ़ी चलती गयी, जिसे घराना कहा गया | घराना का तात्पर्य है कुछ विशेषताओं का पीढ़ी-दर-पीढ़ी चला आना अर्थात् गुरु-शिष्य परम्परा को घराना कहते हैं | आजकल ख्याल के मुख्य रूप से सात घराने माने जाते हैं जो निम्न प्रकार है-

1.ग्वालियर घराना 2.आगरा घराना 3.दिल्ली घराना 4.जयपुर घराना 5.पटियाला घराना 6.अल्लादिया खां का घराना 7. किराना घराना |[5]

[1]राग-परिचय भाग-एक, प्रो.हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, सङ्गीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण 2007 ई., पृष्ठ संख्या 105
[2]नीतिशतकम्, भर्तृहरि श्लोक संख्या 12, अनुवादक डॉ. रमेश कुमार झा और डॉ. रमेश पाण्डेय, प्रकाशन केन्द्र लखनऊ, पृष्ठ संख्या 17
[3]राग-परिचय भाग-एक, प्रो.हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, सङ्गीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण 2007 ई., पृष्ठ 171
[4]वही, पृष्ठ 172
[5]राग-परिचय भाग-तीन, प्रो.हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, सङ्गीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण 2007 ई., पृष्ठ 222-225

1.ग्वालियर घराना-

स्वर्गीय नत्थन पीरबख्श इस घराने के जन्मदाता माने जाते हैं | इनके दो पुत्र कादरबक्श और पीरबख्श थे | कादरबख्श ग्वालियर नरेश स्वर्गीय दौलतराव जी महाराज के यहां नियुक्त थे कदर बस के तीन पुत्र हुएहद्दू और नट्टू का उन लोगों नेसंगीत जगत में बड़ा नाम कमाया नट्टू का कौन के चाचा पर भक्त ने गोद ले लिया था आज सुख के पुत्र गुलाम इमाम खाता तथा उनके पुत्र मेडी हुसैन खाते में देवचयन तोड़ी राज गाने में बड़े नूपुर से इस परंपरा के बाल कृष्णा बुआएक चालक का रणजी कर वासुदेव जोशी एवं बाबा दीक्षित नीलकंठ थे हुआ कैसे थे पंडित विष्णु दिगंबर पुरस्कार थे जिन्होंने संगीत का बहुत प्रचार किया वर्तमान समय के स्वर्गीय विनायक रपट वर्धन स्वर्गीयका साल कर कर की यह अभियान प्रकार सरगी ओंकार नाथ ठाकुर स्वर्गीय नारायण राव व्यास जी इत्यादि परंपरा के गायक थे

आगरा घरानाआगरा घराने का विशेष संबंध ग्वालियर घराने से है इसलिए बहुत सी बातें आपस में मिलती-जुलती है घर आने के प्रवर्तक हाजिर सुजन खान थे आगे चलकर इस घर आने का प्रचारकभी खुदा बख्श द्वारा हुआ वह ग्वालियर के लखन पर हद्दू के बाबा के चित्र बन गए थे और उनसे ख्याल गाय की शिक्षा ली और फिर आगे चले गए इस प्रकार ग्वालियर घराने की विशेषताएं आगरा चली गई खुदाबख्श और जांगू का भाई-भाई थे जंगल खाकर पत्र नाथन को संगीत की शिक्षा भाग्य खुदा बख्श के पुत्र गुलाम अब्बास खान से प्राप्त हुए गुलाम अब्बास खान सर के उस्ताद फरियाद खान के नाना के फरियाद खान आगरा घराने के रन माने जाते थे नटखा की गायकी का प्रभाव सरकारी प्रयास पर फैयाज खान के शिष्यों में शराफत हुसैन और लटाफट हुसैन प्रमुख थे जो आगरा करने का प्रतिनिधित्व कर रहे थे लखन बीरबक्श के पुत्र विलायत कहां हुसैन के मृत्यु 18 में 1962 को हुई

मुगलों केपाटन के बाद तंत्र खान इस घराने को जन्म दिया तंद्रद खान की तानों में एक अजीब बात याद थी कि उनकी गायकदोनों से ऐसा मालूम पड़ता था कि मानो हजारों पक्षी एक साथ उड़ गए हो तार रास्ता के पुत्र मारो खान इस घर आने को आगे बढ़ाया पटियाला घराने के प्रति उस्ताद दलिया और फतेह अली खान से शिक्षा पे सर की चांद का इस घर आने का प्रतिनिधित्व कर रहे थे

जयपुर घरानाआज के लगभग 200 वर्ष पूर्व मोहम्मद अली खान ने जयपुर घराने को जन्म दिया था कुछ लोगों का विचार है कि इस घराने के प्रवर्तक मैन रैंक थे और मोहम्मद अली के वंशज माने जाते थे उनके पुत्र प्रतीत संगीत तक के आशिक अली कहते आशिक अली खान पहले गाना गाते थे किंतु बाद में सितार बजाने लगे उनके शिष्यों में स्वर्गीय जी जैन गोस्वामी और उन्हीं के पुत्र स्वर्गीय मसाकाली प्रमुख थे

पटियाला घराना इस घराने वाला या जिन्हें अली बक्सर कहते थे तथा फट्टू जी ने फतेह अली कहते थे इन दो भाइयों ने चलाया कुछ लोगों का विचार है कि लोगों के पिता बड़े मियां कालू खान इस घराने की नई डाली इन दोनों भाइयों ने जयपुर की गोरख बाय बैरम खान तथा तन रस से शिक्षा प्राप्त की और पटियाला घराने को आगे बढ़ाया अभी तक इस घर आने का प्रतिरोध बड़े गुलाम अली का कर रहे थे बड़े गुलाम अली को उनके चाचा कल खाते शिक्षा मिली थी बड़े गुलाम अली का के पिता अलीबैग्स और चाचा काले खान बड़े मियां कालू कहां से शिक्षा प्राप्त हुई थी का लेखक को फतेह अली द्वारा शिक्षा मिली थी

बड़े गुलाम अली की मृत्यु 23 अप्रैल 1968 को उनके पुत्र मुनव्वर अली जो इस घराने का प्रतिनिधित्व कर रहे थे उनकी मृत्यु हो गई

अल्लाह दिया खान का घर आनाअल्लाह दिया खान अपने स्वतंत्र गायन शरीर द्वारा एक नवीन घर आना चलाया उन्होंने जहांगीर खान से शिक्षा प्राप्त की थी जिन्होंने अपने पिता ख्वाजा अहमद से संगीत सीखा था ख्वाजा अहमद ने मां ओला खाते शिक्षा ग्रहण की थी बाद में खास आप अल्लाह दिया काम हमारा राष्ट्र में रहने लगे उनके भाई हैदर खान जो है कुछ करके गायक सरगी भास्कर बुआ ने संगीत जगत में अच्छा नाम कराया स्वर्गीय मैजिका और भुर्जी का अपने समय के अच्छे कलाकार थे दोनों भाई-भाई थे औरअल्लाह दिया खाकर पुत्र थे मैजिका का पूरा नाम लद्दाख दिए था और भुर्जी का नाम सम्रद दिन का था इस घराने के प्रतिनिधि कलाकार केसर भाई केकर तथा शंकर राव सन्नायक थे

किराना घरानाहिंदुस्तानी संगीत में किरण सैलरी की गाय की एक कन्फर्म दिन है घराने की बुनियाद मुगल काल में हुई यूपी के मेरा जिले में यमुना की भारतीय जब वह कस्बा नष्ट हो गया तब मुगल बादशाह जहांगीर ने उन संगीतज्ञों को उत्तर प्रदेश में जिला मुजफ्फरनगर के किरण नामक स्थान में बताया आता है इस घराने का नाम उसे समय के आधार पर पड़ा कुछ दिनों के बाद वहां के संगीत तल्यों ने इस्लाम धर्म सरकार कर लिया 1870 के लगभग वहां एक प्रसिद्ध दिनकर सादिक अली का रहा करते थे उनके पुत्र विस्तार बंदे अली का एक अच्छे वर मादक और गायक हुए भाई इंदौर दरबार के संगीत तक और महाराज के गुरु भी थे बंदे अली खान के शिष्य में प्रमुखथे मुराद का बिंकर और नन्हे का दुख दिया उनके शिष्य थे अजीम वास और मौला वक़्त आगे चलकर करीम खान अब्दुल वाहिद खान इस घर आने के प्रमुख प्रतिनिधि हुए जिन्होंने इस घराने को आगे बढ़ाया अब्दुल करीम का अपनी मधुर आवाज तथा महुआ गाय के एकीकरण अधिक लोकप्रिय थे जो मिरज में रहते थे तथा इस घराने के प्रतिनिधित्व अब्दुल करीम खान के चार भाई थे अब्दुल हक अब्दुल कलाम अब्दुल मजीदसर की रामबाबू कुंड गोलकर सवाई गंधर्व तथा स्वर्गीय सुरेश बाबू मां ने इसी परंपरा के गायक के दिनों में अब्दुल करीम खाते शिक्षा प्राप्त करती वर्तमान काल में घराने के प्रमुख प्रतिनिधि कलाकार है स्वर्गीय हीराबाई बढ़कर भीमसेन जोशी सरस्वती भाई रानेबराज राजगुरु गंगूबाई मंगल स्वर्गीय रज्जब अली उस्ताद अजमेर का बारे हुआ पाकिस्तान के रोशन आरा बेगम आदि से भीमसेन जोशी गंगूबाई अंकल स्वराज गुरु ने शिक्षा प्राप्त की।

भिण्डी बाजार घराना-

छज्जू खान, नजीर खान और खादिम हुसैन ने 19 वीं शताब्दी में इसकी स्थापना की थी |उनहोंने लम्बी अवधी तक अपनी साँस नियन्त्रित करने में प्रशिक्षित गायकों के रूप में लोकप्रियता और ख्याति प्राप्त की |इस तकनीक का उपयोग करते हुए ये कलाकार एक ही साँस में लम्बे-लम्बे अन्तरे गा सकते हैं | इसके अतिरिक्त इसकी एक अन्य प्रमुख विशेषता यह है कि ये अपने संगीत में कुछ कर्नाटक रागों का भी उपयोगकरते है |

Knowledgeable Research (An International Peer-Reviewed Multidisciplinary Journal) **ISSN 2583-6633**
Available Online: http://knowledgeableresearch.com Vol.04, No.3, March, 2025

चिकित्सा के क्षेत्र में संगीत की उपादेयता

अभी तक संगीत केवल मनोरञ्जन की वस्तु समझी जाती थी, परन्तु समय के साथ-साथ हमारे वैज्ञानिकों (चिकित्सकों) ने यह सिद्ध किया कि- संगीत के द्वारा बहुत सारी गम्भीर बिमारियों का इलाज हो सकता है |

भागमभाग भरी इस जिन्दगी में आदमी को नींद न आने की बीमारी आम हो गयी है | इस बीमारी को **'इनसोमनिया'** के नाम से जाना जाता है | इस बीमारी का रोगी अगर राग भैरवी और राग सोहनी के गीत सुने तो उसे लाभ होगा | राग भैरवी का लक्षण है- **रे ग ध कोमल राखत, मानत मध्यम वादी/ प्रात समय जाती सम्पूर्ण, सोहत सा सम्वादी**|[6] राग सोहनी का लक्षण हा-**तीवर सब कोमल रिखब पंचम वरजित होई | ध ग वादी सम्वादि है कही सोहनी सोई (राग चन्द्रिकासार)** |[7] राग सोहनी को मारवा थाट जन्य राग माना गया है | ये दोनों रागें प्रात:कालीन हैं | इन रागों पर आधारित कुछ गाने हैं- **राग सोहनी**-जीवन ज्योति जले, झूमती चली हवा | **राग भैरवी** –बोल राधा बोल सङ्गम होगा के नहीं, मेरा जूता है जापानी, रमैया वत्ता वैया, मिले सुर मेरा तुम्हारा, भोर भये पनघट पे, ज्योत से ज्योत जगाते चलो, ये दिल ये पागल दिल मेरा (जगजीत सिंह की ग़ज़ल), मीठे बोल बोले, लागा चुनरी में दाग़ |

हृदय रोगी को राग दरबारी और राग सारङ्ग फायदा करता है | इसका गायन समय मध्याह्नकाल है | इस राग को पहले शुद्ध सारंग कहा जाता था | आज इसी को वृन्दावनी सारङ्ग के नाम से जाना जाता है | **राग दरबारी**- मोहब्बत की झूठी कहानी पे रोए, अगर मुझसे मोहब्बत है मुझे सब अपने गम दे दो, हम तुमसे जुदा होके मर जाएँगे रो-रोके, चाँदी की दीवार ना तोड़ी, पग घुंघरू बाँध मीरा नाची थी, बहुत प्यार करते हैं तुमको सनम, गुलाम अली की जानी मानी ग़ज़ल हंगामा क्यों है बरपा भी राग दरबारी में कम्पोज की गई है | **राग सारङ्ग-** अल्लाह तेरो नाम, ग़ज़ल प्रेमियों में लोकप्रिय है मेहदी हसन की गाई- भूली बिसरी चंद उम्मीदें चंद फसाने याद आए ग़ज़ल भी गौड़ सारंग पर ही आधारित है |

आज के युवाओं की सबसे बड़ी समस्या है – **याददाश्त कमजोर होना** | इसके निदान के लिए रोगी को **राग शिवरञ्जनी** पर आधारित गाने सुनने चाहिए | जैसे फिल्म दुल्हन एक रात की का गाना 'मैंने रङ्ग ली आज चुनरिया' | हँसते जख्म फिल्म का 'आज सोचा तो आँसू भर आये', कहीं दीप जले कहीं दिल, मेरे मेरे बीच में, दिल के झरोखे में बना के क्यों बिगाड़ा रे, न किसी की आँख का नूर हूँ ,मेरे नैना सावन भादों, जाने कहाँ गये वो दिन, बहारो फूल बरसाओ मेरा महबूब आया है, माञ्झी रे ना जइयो परदेश, याद तेरी आएगी |

'एसिडिटी' के मरीज के लिए राग खमाज पर आधारित गाने अच्छे रहेंगे | यह रात्रि के द्वितीय प्रहर में गाया जाने वाला राग है | इस राग का लक्षण है- **आरोहन में रे वर्जित कर, गावत राग खमाज/द्वितीय प्रहर निशि गाइये ग-नि सम्वाद** |[8] इस राग के कुछ गाने हैं – याराना फिल्म का 'छूकर मेरे नम को किया तूने क्या इशारा', संगीत फिल्म का 'ओ रब्बा कोई

[6]राग-परिचय भाग-एक, प्रो.हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, सङ्गीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण 2007 ई., पृष्ठ 27
[7]राग-परिचय भाग-दो, प्रो.हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, सङ्गीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण 2011 ई., पृष्ठ 63
[8]राग-परिचय भाग-एक, प्रो.हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, सङ्गीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण 2007 ई., पृष्ठ 19

तो बताये', आन मिलो सजना, नजर लगी राजा तोरे बड़्गले पर, तेरे बिन साजन, मेरे तो गिरधर गोपाल, खत लिख दे संवरिया के नाम बाबू , बड़ा नटखट है रे कृष्ण कन्हैया का करे यशोदा मैया, ओ सजना बरखा बहार आई, अब क्या मिशाल दूँ |

कमजोरी में **राग जयजयवन्ती** पर आधारित गाने सुनने चाहिए | यह रात्रि के द्वितीय प्रहर के अन्तिम भाग में गाया-बजाया जाने वाला राग है | इस राग का लक्षण है- **खमाज थाट जयजयवन्ती, दो गन्धार निषाद/रे प संवाद जाति सम्पूर्ण, द्वितीय प्रहर में बाद** |[9] जैसे – सीमा फिल्म का 'मनमोहना बड़े झूठे', चन्द्रगुप्त फिल्म का 'साज हो तुम आवाज हूँ मैं' 'ठुमक चलत रामचन्द्र बाजत पैजनिया'-भजन |

'डिप्रेशन' के रोगी को **राग मधुवन्ती** फायदा करता है | यह दिन के तीसरे प्रहर में गाया बजाया जाने वाला राग है | इस राग का लक्षण है – **आरोहन में रे ध वर्जित, विकृत ग म जान/प रे स्वर संवाद सो, मधुवन्ती पहचान** |[10] इस राग पर आधारित गाने हैं – सेहरा फिल्म का 'तुम तो प्यार हो', गूंज उठी शहनाई फिल्म का 'मेरे सुर और तेरे गीत',दिल की राहें फलम का 'रस्म-ए-उल्फल को निभाएँ तो निभाएँ, |

संक्षेप में कहा जा सकता है कि संगीत ने आज वह कार्य कर दिखाया है जो बड़ी-बड़ी और महंगी-महंगी दवा कम्पनियाँ नहीं कर पायीं | संगीत का मनुष्य से बहुत प्राचीन नाता है | वह जब बहुत खुशी होता है तब भी गाता है और जब बहुत दु:खी होता है तब भी गाता है | जन्म से लेकर मृत्यु कहीं न कहीं हमारा जुड़ाव संगीत के साथ बना हुआ है |

Corresponding Author: Arun Kumar Nishad
E-mail: arun.ugc@gmail.com
Received: 06 March, 2025; Accepted: 12 March, 2025. Available online: 30 March, 2025
Published by SAFE. (Society for Academic Facilitation and Extension)
This work is licensed under a Creative Commons Attribution-Noncommercial 4.0 International License

[9]राग-परिचय भाग-दो, प्रो.हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, सङ्गीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण 2007 ई., पृष्ठ 90
[10]राग-परिचय भाग-तीन, प्रो.हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, सङ्गीत सदन प्रकाशन, इलाहबाद, संस्करण 2007 ई., पृष्ठ 25